

१

एकादश अंक्षय-



"Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

॥१॥ भ्रीजलेश्वाय नमः ॥ भ्रीमहत्तात्रया दिगुरुवेनमः ॥ ॐ नमो चतुराक्ष
राः चतुरन्वित्प्रबोधचंद्राः तनार्दनसुरेशाः ज्ञाननुरेशनित्प्रबोधे ॥ १ ॥
तुशीकरितांचिजोष्टीः प्रगटस्मिपाठिकोटीः समुखठेसावेदृष्टीः हृदय
गाठिछेदुनि ॥ २ ॥ छेदुनिविषयवामनाः स्वयेप्रगटस्मीजनार्दनाः भाव
अभावभावनाः नेत्रस्मिननाआत्मा ॥ ३ ॥ आत्मतातुज्ञेचरणः आ
कृलेशहेननः सहतदस्मीसमाधानः आनन्दघनञ्चयुता ॥ ४ ॥ तेस्मि
प्राणिरुक्तनाथाः समसाम्येच ॥ ५ ॥ याः पुष्टिलपरीसाविजिकृधाः ते
जेवक्त्वाभीक्ष्म ॥ ५ ॥ उद्धवेविनविवावरिः कपाकृलवक्त्राभीहरिः
नित्प्रज्ञानअतिविज्ञादिः बोधुस्त्रेसागतु ॥ ६ ॥ होतेक्ष्माचानना
स्मीः मङ्गेत्तियानित्प्रधामास्मिः नाइतित्प्रज्ञानकोन्होपास्मिः अतिप्र
मात्तिस्मिंठेवावे ॥ ७ ॥ लवदेश्विलीउद्धवाच्चिअवस्थाः सुखडालेक्ष्मना
थाः वैराग्ययुक्तपदेस्मिताः होयसर्वधानित्प्रज्ञान ॥ ८ ॥ एवं वाचाव
याउद्धवास्मिः क्षम्भृत्यानुपदेश्विः शापलबाधिक्षम्भृत्यास्मिः
हेहशीकेशीज्ञानत ॥ ९ ॥ श्रेष्ठुउपदेशाच्चिह्नातवृष्टिः उपदेश्वर्ज्ञानेत

Digitized by srujanika@gmail.com

गजे इः वैराग्यउपत्ति वितुठाउठिः दोहोपडे प्रस्तु निजलच्छि ॥१०॥ नक
लां वैराग्यदारणः उपदेश्चैकेलादधा तानः हेष्टी ब्रह्मचित्तारो खुएः वै
राग्यविदानबोलतु ॥११॥ परहिलेउद्धवा च्याबोलास्तिः अनुमोदनदेनषी
केशीः तेणो अन्वयेन्मावकाश्चिः ज्ञानवैराग्यासिसूंगतु ॥१२॥ श्रीभग
वानउवाच ॥ भ्रोकु ॥ पराद्युत्तमामाभागतच्छिकीषति त्रेवमेः ॥ अस्माभ
वोलोकपालसर्वामेषाज्ज्ञात्तु ॥ १॥ इका ॥ ज्ञोवेदाचावेद्यवक्ता ॥ ज्ञो
ज्ञानियाचाज्ञानदाता ॥ तेवद्युत्तमामाभागतच्छिकीषति त्रेवमेः ॥ राग्यवत्ता ॥ आइकै निजभ्रमाउ
द्युवा ॥ १३॥ ज्ञेतुं बोलिलास्तिभावः ॥ ४॥ तेवचनतुझेसस्यस्य ॥ तेवचिसा
श्चेमनोगतः ज्ञाननिज्ञितनिज्ञात्तु ॥ १४॥ माइअवस्थाज्ञाएसिल
छाः ब्रह्माद्देवासकूलाः यथेआउहोतेमकोनिमेकाः कोकपालासम
वेत ॥ १५॥ येठनिमाइयेतलिभेटिः अपेक्षादेहोतिपोटिः पुस्तिमा
श्चिप्रयाएग्निगोष्टीः तेनेतुजमोठिअवस्थाः ॥ १६॥ म्यावेग्नियावेगेकुठाः
हेसमर्त्तास्तिउकुठाः आदिकर्त्ता ॥ तेनिकुठाः सुखवद्यष्टाहातसे ॥ १७॥

॥५८०॥ मया निष्ठा दितं द्यं देव कार्यं न दोषतः ॥ पर्वथं न वति लोहम षुए ब्रह्म स
 पार्थितः ॥ २०॥ इका ॥ ज्याला गिब्रले लिप्रार्थिले : तेहैव कार्यं न्यासं पार्थिले : अव
 तारन टना द्यधर्मिले ॥ जेष्ठस्त्रिधर्मिले वलि भद्रा ॥ १८॥ जेष्ठक निष्ठ भावना ॥
 दोघामा इन्ना हित्ताला ॥ द्वच्छ आनिक्रं कर्षला ॥ एकात्मना निजां त्रो ॥ १९॥
 ॥५८१॥ कुक्ळं च राप निर्दग्धं न धर्म च नान्यविग्रहात् ॥ समुद्रः समन्ने द्युताः
 पुरिवै प्राव धिष्ठति ॥ ३॥ इका ॥ उरले अन्ने असचे कुक्ळा ॥ राप निर्दग्ध के वला ॥
 अन्योन्यविग्रहिते सकला ॥ कवलह तजन शाल ॥ २०॥ भूनी नागो लिसमुद्रापासि ॥
 न्यान चिले द्वार के असि ॥ मज्जे गहिया ॥ तजन भाना असि ॥ तो सात वे दिवसि बुद्ध वै ल ॥ २१॥
 ॥५८२॥ यद्येचायं मया सको लोकै यन वृत्तं गठः ॥ भविष्यस्त्विमा न्याधोक किं
 नापि नि रक्षितः ॥ ४॥ इका ॥ आइकै उद्धवा ॥ हित जो शी ॥ न्यामा डिलिया हेभट्टी ॥
 थोड़िया चिक्काला पाठि : न दृष्टि तन होती ॥ २२॥ अधर्म वाढे ल प्रबल ॥ लोक
 होति न छ अनंग गठ ॥ तेअसंग गठ तेव्यमूल ॥ आइकूसन ल सागे न ॥ २३॥ मज्जे ना
 दत्ता हेभट्टी ॥ कलिठ घडुन सकै दृष्टि ॥ मज्जे लिया पाठि ॥ उठा उठे वाढे ल ॥ २४॥

कलिवाढेल अति विष्म ॥ ब्राह्मण संउत्तिल स्वधर्म ॥ स्वभावे नावडे दनध
र्म ॥ क्रिया कर्म हं भार्थ ॥ ३५० ॥ भजोक ॥ नवस्त्वं स्वयै वेह मयास्य के महात्मे ॥
जनोधर्मजाचिभद्र भविष्यति क्वौयुग ॥ ३५१ ॥ इका ॥ न्यासा उपलिया महीत द्वि ॥
प्रब्रह्म ब्रह्म वाढेल कलिं ॥ तुवां आत्मि चिनिधी ज्ञेता लक्ष्मि ॥ जवतो कलिनात्म
ले ॥ ३५२ ॥ कलीआत्मे लज्जेका ॥ लज्जे अधर्म वाढेल तेका ॥ कुविद्येचाउठुलिल
हावा ॥ स्वेघधावा निंदेच्या ॥ ३५३ ॥ न लज्जे स्वाधर्म चिकवडी ॥ तक्कीकृद्विनिंदे
चिया क्रोडी ॥ ऐमिकल्युगि वर्णि कुडी ॥ तुवा आर्थ घडी न राहावे ॥ ३५४ ॥ भजोक ॥
संतु सर्वपरी सुज्यम्ले हं स्वजन बंधुष ॥ न आदेश्यननमस्य कृसमद्विचरण्य
गं ॥ ३५५ ॥ इका ॥ उद्गवातुवाया लाग ॥ जयुने निधनिधवेजि ॥ येकलाचिआगो
वांजि ॥ हितालागी सर्वथा ॥ ३५६ ॥ धनधान्य समधिस्ति ॥ साडावे स्वजन गो जास्ति ॥
भ्राता दुहिता न जबंधुसि ॥ स्त्री पुत्रासी सुज्ञावे ॥ ३५७ ॥ स्त्रै होडै उनिधूरदारेस्ति ॥
ज इतुं बाहेरि निधसी ॥ तरितो साहुन येमा श्यामनासि ॥ अनर्थकार्यी सि
होईल ॥ ३५८ ॥ आधिसन्तक स्त्रै होखाडावा ॥ पाठुअ भिन्नानुहिंडावा ॥ वासना

Religious Sanskrit Manuscript, Marathi, Dhule and the
Sangameswar Chaitanya Prakashan, Mumbai

॥२॥

जयानुरसुंडावा।।मगसाडाआभ्यरु।।३२।।स्त्रेहोक्तेसेनिसाडे।।अभिसारुक्तेसे
 निदंडे।।हेतुतवाटैलसाकडे।।तदिरोक्तेपरिसे।।३३।।नाशेस्वरपत्रेसर्वगो।।
 तेचेठेउनियाचित।।सावधानेसुचित।।माहावेसततनन्नजरुपि।।३४।।तये
 स्वरुपिचिता।।निर्धारेसिधारएगाधशिता।।निजभावेतन्नयनां।।तटप
 लापावैल।।३५।।भंगीजउकीष्टुठ।।याबेतझृपलालिहठ।।अभ्यासिका
 हिनाहीअवघउ।।तोअभ्यासुरुठविष्टकेलाँ।।३६।।नाशेस्वरुपज्ञानघन।।
 ध्यातामीवस्यवेसज्ञान।।स्वस्त्रितीध्यान।।सहजेज्ञानतटप।।३७।।ते
 थेसपसाम्येसनस्त।।समतोपावेलनिताचित।।तेहोसतनावेनिक्षित।।जे
 थिनातेथेगहावे।।३८।।आथिरुठारुमातेयागवे।।मगभ्यालहसीको
 ठेशहावे।।रेसेमानेलस्वभावे।।तेविरोबरवेआइकै।।३९।।स्वरुपसा
 न्येसमदृष्टी।।सतभावेविचरैलभर्णै।।निवासस्तानाच्चिआटारै।।स
 र्धोपोटिनधरावे।।४०।।तेथेअकल्पकाळवस्तिघडे।।साठायाच्चाअ
 भिनाच्छेठे।।वर्गितस्त्वानरेसेकुडे।।वर्तीचेलाकडे सर्वधानधरी।।४१।।

(6)

॥३॥

तु सर्विसर्वं गत होऽसि ॥ सर्वोधार सर्वदे सि ॥ औ मा मि होऽनिन्द्रिय
नहाल तां योसि निन्द्रियामा ॥ ४३ ॥ मजा निन्द्रियामा न्यावे ॥ हो ते पुस्ति लेह
द्वे ॥ ते निन्द्रियो धस्य नावे ॥ स्वये के रावे सागितले ॥ ४४ ॥ न करि ता हेडपा
यम्भिति ॥ सर्वथान घडे मा भिप्रासि ॥ नगतु निन्द्रियामा प्रति ॥ के स्यागति
घम्भिल ॥ ४५ ॥ गरुडिवाहु निन्द्रिया ॥ न्यावे निन्द्रियामा सुरासि ॥ गति ते
धे ना हिपं नवासि ॥ गम्य गरुडा सिते न इ ॥ ४६ ॥ साडु निकुभ यपक्षासि ॥
साधक पावति न प्रपासि ॥ पक्षा भिमा ने गरुडा सि ॥ गम्य त्या सिते लोन
दे ॥ ४७ ॥ सुरा सिन्योवे धे उनिन्द्रिया ॥ न तरुवाहु चिना हिक्रिश्टुडि ॥ तु जन
साडितां अहं खुडि ॥ गमन न सिद्धु तप ना ही ॥ ४८ ॥ न सुगिला अहं खुडि म्भिति ॥
के लया ना न दुपाय युक्ति ॥ ते लग्नि निन्द्रियामा प्रति ॥ न कै गति सर्वथा ॥ ४९ ॥
जे जे देख सिमा कार ॥ ते ते जारा पानै भयर ॥ ते च्य विषी चानि धरि ॥ करि मा
चार ॥ निन्द्रियो धे ॥ ५० ॥ ऊफ ॥ यादि दमन साका चान्कुमां भज वणाद भिः ॥
न भव दं गद्य मालं च विद्रिला यामनो मय ॥ ५१ ॥ एका ॥ जे जे भूट दृष्टि देविले ॥

Digitized by srujanika@gmail.com

॥४॥

३
 ॥ तेते दृश्यते वा क्लिले ॥ ज्ञेते भ्रवना गोचर ज्ञाले ॥ तेहि वा क्लिले त्राक्षा ते ॥ ५० ॥ ज्ञेते
 वा चावदे ॥ तेते वा क्लिले ज्ञात्य वादे ॥ वा च्छिक साड विक्ले वेदे ॥ तेति नादे बोक्ला ॥
 ॥ ५१ ॥ ज्ञेते संकल्पे आक क्लिले ॥ तेते कृत्यीत पैज्ञाले ॥ ज्ञेते अहं कामा पैआले ॥
 तेते वा क्लिले विज्ञात्या ॥ ५२ ॥ ज्ञेते इद्रिय गोचरे ॥ तेते ज्ञाए पान भ्रवरे ॥ हेनि
 स्यानि सविचारे ॥ केले नवदे निवित्ता ॥ ५३ ॥ तोहि निसा निसविवेकु ॥ ज्ञाए
 पानि श्रवय माइ कु ॥ एवं सायान यहु कु ॥ कर्षिसंकल्पुभृष्टि हु ॥ ५४ ॥ ज्ञे
 कु उद्देश्वर संसार ॥ तेक्षणा उक्षणे हुन ॥ वाल रव तु साचारु ॥ ध्येय नि
 धीन धक्कनि ॥ ५५ ॥ ज्ञेसा च्छप्ति चित्त रोवा ॥ केवल भ्रमा चिज्ञानिव ॥ तेसे
 चिज्ञाए हमर्वा ॥ भव वेभव विज्ञान ॥ ५६ ॥ भ्लोक ॥ पुंसो युक्त स्यनानाथौ ॥
 भ्यनः संगुरु दोष भाकु ॥ कर्मा कर्म विकर्मे तिगुरु दोष घियो भिधा ॥ ५७ ॥
 ॥ ५८ ॥ परमा त्तेनि सीधि भक्त ॥ तो पुक्त षबो क्लिले अदुक्त ॥ स्यासि नाना
 त्वेभेद भासत ॥ निति निति तत्त्व विसर्गो निनि ॥ ५९ ॥ साविसराचे नितुक्ता से ॥
 भिथ्या भेद सस्वेभासे ॥ स्याभेद चेनि आवेदो ॥ अवश्य दिसे उरु दोषु ॥
 ॥ ५१ ॥

॥४॥

जदि ज्ञेदुचिना हि ॥ तर्गुरु दोष चिपाहि ॥ दिसावयाठावना हि ॥ भुद्धाचा
हाइ सर्वधा ॥ ५८ ॥ माकांगे भेदाच्याउङ्कटि ॥ युए दोष हृषीउठि ॥ तेघे कर्मा
कर्म त्रिपुटि ॥ भेद हृषीठसावे ॥ ५९ ॥ भेदधोर केले विषम ॥ कर्म अकर्म विक
मी ॥ सन्मत रुण दिधर्म ॥ नित्यकर्म प्रकाशि ॥ ६० ॥ कर्म विकर्म निरक्षयातना ॥
काम्यकर्म न्यवर्गजाए ॥ कर्म चिकित्तिगर्म नोचना ॥ समाधानापावित्रे ॥ ६१ ॥
यथेसुरास्तिकर्म कोए ॥ अकर्माचेकवरालभल ॥ विकर्माचाकवरागुन ॥
तेहि संप्राणप्रिसपा ॥ ६२ ॥ कायामाना अथवासन ॥ कर्म त्रितु कर्म
ज्ञान ॥ संस्कृति चेत्येभान ॥ तेन त्रितु ज्ञाए कर्म चे ॥ ६३ ॥ सन्मावाचादे
हि ॥ सर्वधाकर्म बीजना हि ॥ ६४ ॥ तित्रेतपाहि ॥ नपडेठाइदेहवंता ॥
॥ ६५ ॥ तेकर्म वेगछेसर्वांगे ॥ तेघे कर्म लावितानलागे ॥ तेन कर्म ठा
ज्ञान ॥ ज्ञानसवेगेते अकर्म ॥ ६६ ॥ विधि नित्रोध तोडपाडे ॥ तेघे वित्रोक्ते
र्म वाढे ॥ विकर्म साते सुरानेघडे ॥ थोरसाकडे पैयाचे ॥ ६७ ॥ कर्म सर्व
साधारण ॥ तेचिविकर्म लेपावले ज्ञाए ॥ उठिले विधि नित्रोध दारण ॥

१५।

विकर्नेज्ञाएतेस्तुगिरो ॥६८॥ लैविधिस्तिनातुडे ॥ तेजिरोधाच्चआगच्छे ॥
 कश्चित्तांच्चुकेठाकैविकलपडे ॥ तेहिगोकडेनिमिद्यन्ति ॥६९॥ लैसेकर्नेविका
 रले ॥ तेविकर्नपटेवास्वालिले ॥ एवंकर्नाकर्नाकर्नदाविले ॥ विभागलेतुज
 रुमे ॥७०॥ त्रीवास्तिअविद्यकउत्पत्ति ॥ साच्चिकमेअविद्यकहाति ॥ श्रीधर
 व्यास्वानाचियुक्ति ॥ तेहितपपत्तिपरिमाप्ति ॥७१॥ अविद्यायुक्तज्ञीवपरम ॥
 सास्तिनिष्टुक्तियालेच्छिकर्म ॥ नियाकरणतक्तेत्ति ॥ विकर्नेतेनिरोधः ॥७२॥
 विकर्ने
 रेस्तिकर्नेत्रिपुष्टि ॥ नेदोत्तेवाढ ॥७३॥ तेपेणुएदाष्टबुद्धिचापोटी ॥ भेद
 दृष्टीवाढवि ॥७४॥ अनेदीनेदेनेसातठे ॥ लैएगुणदोषनादेदृष्टि ॥ विधि
 निषेधिपाउस्तिपुष्टि ॥ तेहिगोछ ॥७५॥ पुरुषयेकयेकज्ञाचिअसे ॥
 तोच्चमनोरथपुजेबैसे ॥ ध्येयध्यानाध्यानस्तिसे ॥ वाढविषिसेनेदाच्च ॥७६॥
 तेधेनानापश्चित्पचार ॥ पुजासामुर्गीसंभार ॥ लैसायेकपण्ठिअपार ॥
 नेदसाच्चास्वाढवि ॥७७॥ तेधेध्येयउत्तमस्तुलेज्ञान ॥ ध्यानानिच्छहोयआपण ॥
 तदंगेध्यानगोण ॥ गुणदोषस्तालवाढवि ॥७८॥ ध्यानिगुनदोषविचित्र ॥ ध्येय

(६)

१५

४

६०

स्तु लोपरम्भवित्र॥ ध्यातां आपरणहोय अपवित्र॥ श्रोच्चाच्चारदोषत्वे॥ १७ ताएवं
 ध्यानाच्चिद्येदृष्टी॥ आपलच्चिपै आपत्यापोऽस्ति॥ गुलदोषाच्चित्रिपुष्टि॥ भेद
 दृष्टीवाढवि॥ १८॥ अपध्याताध्यान॥ अवघेच्चिआहेआपल॥ तेसाडुनि
 याज्ञाला॥ गुलदोषलक्षणवाढवि॥ १९॥ उडवाढेहेअवघीभृष्टी॥ वाढलि
 अजेनेदृष्टी॥ तेलेजेदृष्टुष्टुष्टि॥ कर्मचित्रिपुष्टि वाढविलि॥ २०॥ तवज्ञवज्ञ
 दाचाज्ञिक्षुक्षा॥ तवतविषयान्नामोहका॥ पाळितेइंद्रियाचालक्षा॥ तवत
 वआगक्षासंसारु॥ २१॥ मर्यादा लिते प्रदण॥ तेचिपरस्तोनिहोयविष॥ तेव
 सेइंद्रियाहितेसुख॥ तवतवदुःखज्ञ गेहो॥ २२॥ भ्लोक्॥ तस्माद्युक्ते द्रिय
 ग्रामोयुक्तचित्तइंजगदा॥ २३॥ क्षिम्यवितत्तमात्मानमध्यधीश्वरे॥
 ॥ २४॥ उक्का॥ यातागीइंद्रियाच्चाद्वासि॥ विषयोनद्यावाच्यतुनी॥ उतेविवि
 षइराघिलिक्षीरघारी॥ साडितेदुर्ग्रेसज्जाने॥ २५॥ मघमघीतअमृत
 पक्कले॥ वरेसपेघातलियागरक्के॥ २६॥ तेनसेवितिकाउक्के॥ सेवनिक
 क्कलेनजघातु॥ २७॥ तेसेविताविषयासि॥ कोनगोडीमुमुक्षासी॥ प्रति

Digitized by srujanika@gmail.com
 Digitized by srujanika@gmail.com
 Digitized by srujanika@gmail.com
 Digitized by srujanika@gmail.com

॥६॥

परिआत्मघातासि ॥ अहिनिशीदेवता ॥ ८६ ॥ आत्मपातुन देवति ॥ ते
 विषईविषयोसेवति ॥ ज्ञेसेदिवाभितामध्यरात्री ॥ असतांगभक्तीमाध्या
 न्ती ॥ ८७ ॥ तेसेचिविषयसेवण ॥ मुमुक्षासिघडेजाण ॥ तदिनचुकेतन्म
 नदण ॥ आत्मपतनतयाचे ॥ ८८ ॥ स्तरासिप्राणियाच्चित्ति ॥ विषया
 वरीनिक्षिति ॥ विषयसागेके विगतति ॥ सातेसुगमस्थितीअवधारि ॥
 ॥ ८९ ॥ असतांइद्रियाचेनेन ॥ करिचित्ताचउपरम ॥ ते सादोहिपरिसुगम ॥
 उनमोत्तमुक्तसामु ॥ ९० ॥ इद्रियेअलोकुविषयावशि ॥ मनरिद्योनेदेसाभि
 लशि ॥ हुहिसामुसर्वपश्चि ॥ यो ॥ ९१ ॥ मनासिविषयाचे
 बळ ॥ विषयध्यासेतेवपळ ॥ ॥ करिचित्ताच्चित्ति ॥ आइकसमुक्तु
 पाव ॥ ९२ ॥ माझेच्चकृपसर्वगत ॥ मेनावाहेप्रभानिआनिआत ॥ जेधेनेधे
 आइलचित्त ॥ तेधेनेधेतेअसे ॥ ९३ ॥ उजवेगलेजावयासि ॥ उपावोना
 हिपेच्चित्तासि ॥ च्चदेश्चिहोपरदेशि ॥ अहिनिशीमन्त्रआंतु ॥ ९४ ॥ रें
 सेनिजरूपमतंत ॥ पाहतांधोशब्देलचित्त ॥ माचित्तामानिआयंत ॥

॥६॥

पाहेसमस्तहेजग॥१५॥ अथवाजीवस्यस्तपतुज्ञेचाग॥ स्यामाजिपाहातो
हेजग॥ जगच्छिहोइलदुर्भेआंग॥ अतिअव्येगनिश्चित॥१६॥ वरेआनि
अचरे॥ लाहानकाथोरे॥ जीवस्तपिसमिस्तरे॥ पाहनिर्धारेहेजग॥१७॥
सलसिजीवतोयेकदेशी॥ स्यामाजिकेच्छिपाहावेजगा॥स्मि॥ स्याज्ञितंक्षे
ताक्षिमित्तस्मि॥ जेविकनकेजिअक्षंकार॥१८॥ चिंतितांकीटकीभृत्य
द्वि॥ तेच्छिहोउनितुष्टि॥ तेसातुंउठाउढी॥ होईनित्तहृषीनित्तत्त्वा॥१९॥
होकांसेधवाचागडा॥ पड़या॥ तुजतवडा॥ होउनिठाकेसायेकुडा॥ तेस
सातुरोकडा॥ महोउनिटास्मि॥२०॥ तेथेस्तितुपरान्नानेद॥ प्रिटनित्ताइ
लविषद॥ परनानंदभुद्धबुद्ध॥ तुर्तुर्तुहोस्तीगण॥ भरोक॥ ज्ञानविज्ञान
संसुक्तआत्मभृतशरीश्विलां॥ आत्मानुभवतुष्टात्मानात्मायेच्छिहन्यसे॥
॥२१॥ उटका॥ शास्त्रभ्रवरोद्धज्ञान॥ मननाभासेहोयविज्ञानज्ञान॥ पा
दोहिच्छिजालोनिखुए॥ ब्रह्मसंपन्नतुहोस्मि॥२२॥ एस्तियास्यार्थीनेलव
लाहे॥ अविभ्रमभज्ञावेतुज्ञेपाये॥ स्यास्मिवोउव॥ तेलअंतराये॥ स्यासि

॥१७॥

कायकरावे॥३॥ साडोनितं भिक्षुलोकिक।) लक्ष्मियाप्रवानिलाजा।) ज्ञोनज्ञभजे
 नाविक।) विघ्नदेवसाकैचै॥४॥ साच्चाविघ्नोमिदेव।) करिचक्राचिन्दरव
 लरव।) द्वेऽनिपाठिसिअचुक।) उभासन्मुखनीअसै॥५॥ यापरितङ्गव।)
 ज्ञानज्ञनज्ञनित्तनाव।) सास्त्रविघ्नकरावयादेव।) नक्षेत्रठाकृनज्ञत्तभसता॥
 ॥६॥ एवंब्रह्मसंपन्नज्ञालियावरि।) आस्तातुंचिचराचरि।) गैत्रेमआनि
 म्भावदि।) सुरासुरीतुचितु।) ७॥ दुर्जाहोडनिकाहि।) अनुभरिवेगवेना
 हि।) तथेविघ्नकैचकाइ।) लक्ष्मियाधील।) लाब्रह्मादिकासिलोगार्जी।
 स्याकाळाचातुआस्ताहोस्मि॥।) पाठिधापटोलाहशीकैशी॥।) उद्धवासी
 म्भागतु।) ८॥ हेसिबाध्यवाध्यन्तरात्मरुलि।) संकल्पवाल्पनातुरुलि॥।
 ब्रह्मानंदेपहाटफुटलि।) वाटमोउलिकूर्मीची॥।) ९॥ हेसाब्रह्मादुभवि
 ज्ञोदेवव।) कर्मतेच्छेहोयनंक।) वेदतयाचेसेवक।) विभिविवेक्षनारी॥।
 ॥१०॥ हेचाकृतीसाज्ञोकाइ।) नीचस्याचाआज्ञाधारपाहि।) प्रतिष्ठेत्तज्ञेते
 व्याइ।) तथेपाहिप्रभेकरु।) ११॥ वचनमात्रासाटि।) प्रगंटलोयेकोम्भु

॥१७॥

येकाछि॥दुर्वासावाहिलापाठि॥तांहिदृष्टेदेश्चिले॥१५॥सुलस्तेवत्या
चाअङ्गाधार॥कर्मसाचेक्षिकर्॥तरिज्ञातेयेधेष्ठाचार॥विषइसाच्चा
र्वत्तेति॥१६॥ज्ञासासिस्त्विष्ठाविषयाचरण॥सर्वधानघडेज्ञाण॥ते
हिविषयेचेलक्षण॥सावधानपरिसङ्ग॥१७॥ज्ञासिस्त्वपृथिभिसान
निध्याप्रपंचाचेभान॥मृषाविषयाचेदानुरा॥विषयाचरणसानाहि॥
॥१८॥ज्ञासिप्रपंच्याचिअवडि॥विषयाचिप्रंतिगोडि॥यथेष्ठाचरण
चिगोडि॥पडेसाकेतयासि॥१९॥ज्ञानमाचेठाइ॥सस्त्वेविषयोनाहि॥
नाभोगवयाकाहि॥अभिग्नासपागहतोहोइल॥११॥आत्मज्ञातयाचेकर्त्त
आइक्षौगोस्याचेवर्त्ति॥नात्मत्तेसत्ताधर्षि॥क्रियाकर्मआचरति॥५१॥
॥५२॥दोशबुद्धेभर्यातीतोनिज्ञाधान्नानिवर्तते॥गुनबुध्याचविहि
तेनकरोतियधार्जकः॥११॥टिका॥गुनदोषातीतज्ञाता॥तोनिक्रोधिनि
वर्ततेतत्त्वता॥परिभ्यालेपणचित्ता॥नाहिसर्वधातयासि॥२०॥तोविहित
हिकर्मकर्त्रितेधेयुएस्त्रिविष्ठनधर्ति॥कुल्लाक्षचक्राचियापरि॥प्रव
संखारिवर्ततु॥२१॥संकल्पिनाहिवर्त्ति॥हेतुस्कुरेनाचित्ति॥तेसिकर्मज्ञा

॥८॥

(१)

तेकरिति ॥ शारीरस्त्रितीकेवल ॥ २३ ॥ तेथेसत्कर्त्तस्त्रिकुगेले ॥ तेलोपुगेनाम्या
 कले ॥ अथवामाजादिविकलपडले ॥ तेलोहनव ॥ गलेपएनाही ॥ २४ ॥ निद्रि
 स्तानागेबैसलावागु ॥ अथवापुठेआलाख्यगंजोगु ॥ त्यास्मिनाहिभयआ
 नंदविरागु ॥ तेसालाहुज्ञाताच्च ॥ २५ ॥ हुनहोषिचिन्तुटति ॥ माङुनिया
 सहजस्त्रिति ॥ बालकेज्ञवि क्रिडाकरिती ॥ तेसीस्त्रितीज्ञास्याचि ॥ २६ ॥ अ
 भिन्नानेकर्त्तप्राप्ती ॥ स्याअभिन्नानातेसागिती ॥ मगनिराभिन्नानेकेवि
 वार्तति ॥ कर्त्तस्त्रितीसानघरे ॥ २७ ॥ साविकस्पन्दिकरिसी ॥ तेस्त्रित
 नवक्लेइतनासि ॥ निराभिन्नामुख्य उभवैस्मि ॥ केविवेशसीक्लेल ॥ २८ ॥
 देहेप्रापर्थ्याचेनिनेक्ले ॥ स्वभावसवर्गमेवक्ले ॥ तेथेअज्ञानाचेनिमेक
 ले ॥ अभिन्नानस्ववक्लेभिकर्त्ता ॥ २९ ॥ तेथेहुनवाक्यअनुवदति ॥ अभ्यासो
 नियथानिगुणि ॥ अज्ञानसहितानिरस्त्रिति ॥ अभिन्नानस्त्रितिनिजबोधे ॥
 ॥ ३० ॥ ओषप्रापर्थ्याचेनिनेक्ले ॥) निराभिन्नानदेहचक्ले ॥ ज्ञातेकर्त्तकरिति
 सक्ले ॥ जाएनसक्लेज्ञादिदे ॥ ३१ ॥ केवलशारीरेक्मेहोति ॥ तेचिअहेतुके
 वौलिज्ञति ॥ अर्नेकट्ट्वानुपपत्ति ॥ हविस्त्रितिसागितल्ल ॥ ३२ ॥ (निराभि

•

॥९॥

मानावेलक्षणे॥३३॥ वातेआइकस्तरे॥ येरआनंदलाअंतःकरणे॥ सादर
पलोपरिसतु॥३३॥ भूक्र॥ सर्वं न तसुहस्तातोज्ञानविज्ञानविभ्रयः॥ पञ्चम
श्यनादस्मकूविश्वं नविद्यतयैपुनः॥३४॥ एका॥ पाहुलेज्ञास्त्रभवणज्ञान॥ त
दलभवेहोयविज्ञान॥ तेस्माविज्ञानसंपन्ने॥ लिराभिमानतोरामे॥३५॥ साच्चि
निराभिमानता॥ जरिआलहोयहाता॥ तदिकांतितेधेसर्वथा॥ उल्लासतांपै
पावे॥३६॥ ददुनिभ्रवहोरेकादातत्रात्मनिहासणे॥ तेकांतिरेण्डुकोण
स्तरे॥ आक्रोशपणेसाहारुसे॥३५॥ गोत्रस्तिस्तितेरेण्डु॥ सागरिआक्षो
स्तरे॥ आक्रोशपणेसाहारुसे॥३६॥ नानासरिताचेष्व
भन्तातेन्द्रि॥ चढुवोहटुनाहुलि
लुक्कल॥ आनुनिघालिस्तमक्कलक्कल॥ लुभ्रिनकेगठुक॥ अतिनिमिळनि
क्कांगे॥३७॥ तेस्तिनानाभृतिविष्टनका॥ स्वार्थविरोधेआजिआदलता॥ पा
लटुनकेत्याच्याचित्ता॥ जारुसर्वथा निङ्गचांति॥३८॥ तेस्तिनिमिळनि
देष्वा॥ तोविसर्वभृताचास्तर्वा॥ आवउत्तासर्वलोका॥ सुहुदतीकांसर्वाचा॥
॥३९॥ नवलस्तर्वद्वाचिपरि॥ सुवर्ष्यद्वन्तमेत्री॥ स्वार्थविरुद्धनकरि॥
दूपापात्रिउपदेशु॥४०॥ अलक्ष्यसाचिपाहातिदिठी॥ महृषेन्वेभृष्टी॥ जग

॥११८॥ यमज्ञाभिन्नगाठि॥ निहृष्टश्विवा धिलि॥ अ॥ नगतो जोडते पाहे॥ लेउतामी
बतमाआहे॥ तोहरामीतातेनपाहे॥ लेणपाहानेमीहोयेस्याचे॥ अ॥ साचि
पाहा॥ लेडोदी॥ तेमीचहोयेजगजी॥ एसितयानजोयेकुगाठि॥ सकवभू
शीसमवेत॥ अ॥ अघवेतगमीचहोये॥ तेद्यातोमिनाघजाये॥ रेसानजे
माजितोसमाये॥ समसाम्यिसमत्रै॥ अ॥ माझुनियामनोधर्म॥ रेसाजोना
कासुगम॥ सामिकेचेपुनतिजनन॥ दुःखदुर्गमयाकेचेनि॥ अ॥ मालेसा
उद्रकुहवी॥ रजस्वलेच्यामधि॥ यमाइया रिग॥ पिसाचेनिरेतद्वाग्मि॥ गर्भसं
चारिसंचरण॥ अ॥ जेमालेच्यातु
लुनाक्रितोउडुरिशिरि॥ विश्वानु
ग्राचेदाथर्गरि॥ नवमासवरितुक
रु॥ जठरगम्भीच्यालोडी॥ घालुमि
गर्भाचिडंडि॥ उकडुकडुपिडा॥ गर्भकाढीघडीजलि॥ अ॥ लेगर्भिचीवेद
ना॥ कंनानापरिचियातना॥ नकोनकोभीहसरघुनंदना॥ चिळसमना
येतन्से॥ अ॥ अवद्यियाचेसेवृष्टि॥ प्रसूतिवायोजोडौठीधुआटी॥ सर्वांगिवेद
नाउठी॥ योनिसंकटीदहनन्ते॥ प५॥ रेसेपेशपवित्रज्ञैम्॥ लेणपावतेन
जोत्तम॥ जिहिटाकिलेमाजेनजधान॥ पुरुषोत्तमसमसाम्ये॥ प५॥ मिअस

तापा इयोर्या॥ स्यासि काई स्याजन्म गोर्यी॥ कुलिकाक्षाते नारा लिहृषी॥ जालेड
ठाउठिमहृप॥ ५३॥ जेथे जन्म नाहिज्ञाले॥ तेथे मरन एक गति चिंगले॥ ऐसे
भजो निमाते पावले॥ भज एव बले महत्त्व॥ ५४॥ कुसुम उद्धवाते धापटी॥ तुलणे
वैशिष्ठं उठी॥ हेचिह्नावे चिह्नात वटी॥ जन्म तु उत्तेण होय॥ ५५॥ जैसे नेघनु
मवीचेउद्धव॥ वर्मिचावरि भिक्षिचात कर॥ तेसे दूज वदनि चेदेश्वर॥ उद्धवे मु
ख पसदिले॥ ५६॥ काच दकिर रानी चर॥ जैविअल्यत सादर॥ तेविउद्धवाचा
आदर॥ उद्देश्यो दहरि चरणी॥ ५७॥ तोकाप भिणी देश्वालिपिले॥ जाणो नि
चार याचे नेवले॥ साडो निया आ॥ वे राक्षे॥ मुख्य कोवले पसदि॥ ५८॥
तेविदेश्वा लिहृषी सुख॥ उद्धवाचि अन्त सुख॥ भ्रवणा चे निसुख देश्वर॥
कृष्ण पियद्रष्टवै वित॥ ५९॥ भूते का॥ आ॥ उद्धवाच॥ इसादिष्ठो नगवता महा
नगवता नृपः॥ उद्धवः प्रणिप पसाह लति ज्ञासुर च्युतं॥ ६०॥ इका॥ उद्ध
कुसुमे क्रोशवना धा॥ कृपाउपजलि भगवता॥ उपदेशिले महा नगवता॥ जा
नक धा निज वोधु॥ ६१॥ तेआइ क्रुञ्जिउद्धव॥ भ्रवणे उठलि धोरहाव॥ कैसे
बैलिलाझान गोरव॥ अनी अपूर्वं भ्रीहसुम्॥ ६२॥ श्रीदृष्टि भ्रुनवे सागोको

Digitized by srujanika@gmail.com

॥१०॥

३। तेनिरोपणात्तिगेह ॥ त्रिविद्विउठलिभ्रवणचाड ॥ उलंघवेनिउदेवाचि ॥
 ॥६१॥ आवदिक्खवडेलेचित्त ॥ घालिसाथागहुडवत ॥ हातज्ञोडुनिपुसत ॥
 सप्रेसभक्तुडहव ॥६२॥ भ्लोक ॥ उडवउवाच ॥ योगेशयोगविन्यासयोग
 तन्योगसभव ॥ निभ्रेयसायतेप्रोक्तस्यागः संन्यासलक्षणः ॥६४॥ इका ॥
 आइकैयोगियाचायोगपति ॥ योग्याचाठेवातुभ्रीपति ॥ योगीप्रगटतुयो
 गन्तर्ति ॥ योत्येगोन्तितुजपाति ॥६३॥ नमोक्षामिकारण ॥ सागसंन्यासल
 क्षण ॥ बोल्लिसितोअनिकर्तन ॥ प्रसदारणहासाग ॥६४॥ भ्लोक ॥ सा
 गोपदुष्करोभ्रमदकामानविद्वात्तिनिः ॥ सुतनांस्यपिसर्वात्मदनभ
 र्हेद्वित्तमेसति ॥६५॥ इका ॥ प्रहाता ॥ सागा ॥ चिद्विति ॥ मत्रतवदुर्धर
 गाभ्रीपति ॥ मगइतराचियेधनात् ॥ कवण्यादितहोइल ॥६५॥ काम
 जयाच्याचित्त ॥ विष्विआसर्वमति ॥ सामिसागा ॥ चिगति ॥ नक्षेभ्रीपति
 सर्वथा ॥६६॥ लुंसर्वात्माहई ॥ चित्तप्रवैशेणातुभ्राठाई ॥ तेआवरिजेभ
 सेविष्वई ॥ नवलकाइसागावे ॥६७॥ रेसेप्रपंचीआत्मक ॥ याकागिन्द्रव
 आकेअभक्त ॥ सामिसागनक्षेहानिभ्रित ॥ चित्तदुभ्रितसर्वदा ॥६८॥ सा

११

॥१०॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com